Course-- M.A(Education),Part-1

Paper -3rd,Philosophical foundation of Education)

prepared by-Dr Meena Kumari

Topic- Nature of philosophy

--++-+----+-+-+++--++++---++++++++++-_++(++++---++

दर्शन की प्रकृति
(Nature of philosophy)

(1) प्रस्तावना -दर्शन मनुष्य के जीवन का लक्ष्य सुनिश्चित करती है तथा शिक्षा इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होती है जब हम शिक्षा के लक्ष्यों पर विचार करते हैं तो दार्शनिक आधार पर उसकी व्याख्या कर सकते हैं वस्तुत शिक्षा एवं दर्शन एक सिक्के के दो पहलू हैं शिक्षा एक गत्यात्मक पहलू हैं तो दर्शन विचारात्मक तथा गहन चिंतन पर आधारित है दार्शनिक विचार के आधार पर शिक्षा के द्वारा हम व्यवहारिक जीवन को सफल बना सकते हैं प्राचीन काल से आज तक दार्शनिकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जैसे गौतम बुध महर्षि अरविंद विवेकानंद रविंद्र नाथ टैगोर जेबी कृष्ण की कथा गांधीजी ने शिक्षा के दार्शनिक आधारों को मजबूत किया है यदि हम दर्शन के आधार पर बात करें तो वह चिंतन है तथा शिक्षा का आधार दर्शन एवं दार्शनिक विचारधारा को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करना है।

(2)दर्शन का अर्थ एवं परिभाषाएं

दर्शन का अर्थ होता है देखना। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में हम कह सकते हैं कि जिसके द्वारा हम विश्व को देखते हैं या उसका गहन चिंतन करते हैं वही दर्शन है! जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण होता है व्यक्ति का, उसको भी दर्शन के नाम से जाना जाता है! हम विश्व को उसी रूप में देखते हैं जैसे हमारी भावनाएं एवं मनोदशा होती है ।इस प्रकार दर्शन, भावनाओं मनोदशा तथा दृष्टिकोण की तरफ इशारा करती है।
शाब्दिक अर्थों में दर्शन का ग्रीक पर्यायवाची शब्द फिलोसोफिया (philosophia) दो यूनानी शब्दों से बना है।फिलोस(Philos) जिसका अर्थ है प्रेम या अनुराग और सोफिया (Sophia)जिसका अर्थ है ज्ञान इस प्रकार फिलासफी या दर्शन का अर्थ ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराग है। दर्शन का लक्ष्य विशिष्ट दृष्टिकोण तथा विशिष्ट विधि द्वारा विशिष्ट समस्याओं का विवेचन करना है।दर्शन की परिभाषा करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि तार्किक दृष्टि से व्याख्या के लिए जो तथ्य बताए जाते हैं वह दर्शन के विषय में संभव नहीं है । किसी विज्ञान से यह अलग है, दर्शन का अर्थ जानने के लिए उसकी समस्याओं, दृष्टिकोण, विधि प्रक्रिया, निष्कर्षों तथा प्रभावों का विवेचन करना आवश्यक है ,जिससे विशिष्ट निष्कर्ष और परिणामों पर पहुंचा जा सके । प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में लिखा है जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नहीं नहीं बातों को जानने के लिए रुचि प्रकट करता है तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता है उसे दार्शनिक कहा जाता है ।संसार का प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात दार्शनिक है। अत: यह पता चलता है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दार्शनिक रूप में सत्य का खोज करने के लिए उत्सुक होता है। इसलिए वह प्रत्येक वस्तु के वास्तविक स्वरूप को ठीक ठाक समझने में सफल भी हो जाता है ।सत्य की खोज करके तथा उसके बाद वास्तविक स्वरूप को समझ कर प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह

विद्वान हो अथवा मूर्ख अपनी-अपनी विचारधारा तथा सिद्धांत बना लेता है ।जीवन के इन आदर्शों और मूल्यों में विश्वास को दर्शन कहते हैं।
दर्शन की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषा निम्नवत है:_-----
****डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार यथार्थता के स्वरूप का तार्किक विवेचना ही दर्शन है (philosophy is logical enquiry into the nature of reality)**
***" Fischte". Philosophy is the science of knowledge"(दर्शन ज्ञान का विज्ञान है)**
**** रसल के अनुसार" अन्य क्रियाओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है"**
**सेलर्स के अनुसार दर्शन उस निरंतर प्रयास को कहते हैं जिसके द्वारा हम अपनी और संसार की प्रकृति के संबंध में क्रमबद्ध ज्ञान द्वारा एक गहन दृष्टिकोण प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं।

(3) दर्शन की विशेषतएं

--- दर्शन का संबंध अनुभव तथा प्रस्तुति के साथ-साथ विज्ञान से भी है।--

(१) अनुभवों तथा परिस्थिति के अनुसार दर्शन--- दर्शन की पहली विशेषता यह है कि यह अनुभव तथा परिस्थिति के अनुसार होता है ।यही कारण है संसार के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को समय-समय पर अपने-अपने अनुभवों तथा परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग तरह के जीवन दर्शन को अपनाया है तथा उसकी विवेचना की है ।उन्होंने अपने दर्शन में केवल सैद्धांतिक रूप से ही भी विश्वास नहीं किया है अपितु इन्हे कार्य रूप में भी लिखित तथा परिभाषित कर दूसरे लोग तक इन तथ्यों को पहुंचाया है। उदाहरण स्वरूप गांधीजी आदर्शवादी दार्शनिक विचारधारा की वकालत की है जबकि रूसो ने प्राकृतवादी सैनिक विचारधारा को सर्वश्रेष्ठ माना है। महात्मा गांधी सत्य तथा हिंसा पर विश्वास करते थे जबकि रूसो ने प्रकृति के निर्णय पर अपना विश्वास दिखलाया है।

(२) दर्शन का विज्ञान_--- दर्शन की दूसरी विशेषता यह है कि विज्ञान के साथ भी घनिष्ठ संबंध है। विज्ञान हमें वास्तविक वातावरण तथा बालक की प्रकृति के संबंध में बतलाता है । अगर हमें जीवन की सच्चाई यों का ज्ञान नहीं होगा तो दर्शन के लिए सत्य की खोज करना कठिन हो जाएगा ।इस बात को ध्यान में रखते हुए यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक शिक्षक को विज्ञान तथा दर्शन दोनों का अध्ययन करना अनिवार्य है। विज्ञान द्वारा प्रस्तुत की हुई वास्तविकताओं तथा स्वीकृत बातें केवल आधार है ,अन्य बातों का अनुमान लगाने के लिए दर्शन के द्वारा निर्धारित किए हुए मूल्यों एवं आदर्शों को हासिल करना भी शिक्षा का लक्ष्य है।
शिक्षा के उपर्युक्त विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सत्य तथा वातावरण में गहरा संबंध होता है क्योंकि हम जिस तरह के सामाजिक ,आर्थिक तथा सामाजिक वातावरण या परिस्थिति में रहेंगे। उसी के अनुसार हम सत्य के रूप को स्वीकार करते रहेंगे तथा अन्य व्यक्तियों को अपने विचारों और विश्वासों से प्रभावित करने के लिए विभिन्न तथ्यों का आधार लेते रहेंगे।

(4) दर्शन तथा शिक्षा का संबंध

दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं ,एक दूसरे में निहित है।दर्शन को शिक्षा की रीड की हड्डी के रूप में जाना जाता है क्योंकि शिक्षा के उद्देश्य दर्शन पर ही आधारित होते हैं।क्या है ?यह शिक्षा का विषय है परंतु प्रश्न को बदलते हुए यह प्रश्न किए जाए कि क्या होना चाहिए? तो यह दर्शन का क्षेत्र है !किसी भी वस्तु, समस्या ,परिस्थिति को विभिन्न कोनों से देखना ही दर्शन है .!जीवन या किसी वस्तु के प्रति विश्वास या दृष्टिकोण उसका दार्शनिक दृष्टिकोण कहलाता है! दर्शन मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है और उसके लिए लक्ष्यों का निर्माण करता है! लक्ष्यों की उपलब्धि मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य है! शिक्षा वह साधन है जो इन लक्ष्यों की प्राप्ति में मनुष्य की सहायता करती है ,शिक्षा के द्वारा ही ज्ञान ,चिंतन एवं कौशल का विकास संभव है जो दर्शन को नया परिष्कृत रूप देता है! इस प्रकार

दर्शन और शिक्षा एक दूसरे का पूरक है !जॉन डेवी के अनुसार अपनी साधारण अवस्था में शिक्षा सिद्धांत दर्शन है! इस प्रकार शिक्षा और दर्शन के बीच परस्पर संबंध निम्न बिंदुओं से भी स्पष्ट होते हैं:_-----
(१) दार्शनिक विचारों का व्यवहारिक प्रयोग ही शिक्षा सिद्धांत है_---- प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दर्शन एक निश्चित विश्वास पर टिका होता है। यह विश्वास दर्शन का एक अंग होने के कारण शिक्षा को भी उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है। शिक्षा दर्शन दर्शन का व्यवहारिक पक्ष है, दार्शनिक चिंतन के हिसाब से शैक्षिक दृष्टिकोण का निर्माण होगा। सुकरात ,प्लेटो ,लौकी अरस्तु, स्पेंसर, रूसो ,टैगोर गांधी, तथा विवेकानंद आदि के शैक्षिक विचारों के रूप में उनके दार्शनिक विचारों के व्यावहारिक प्रयोग किए गए थे।

(२) दर्शन शिक्षा के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है-शिक्षा जगत में दर्शन शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है ।शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम ,अनुशासन ,शिक्षण विधि, पाठ्य पुस्तकें , पाठ्यचर्या,शिक्षक की भूमिका तथा प्रशासन शैली भी दर्शन द्वारा प्रभावित होती है।

(३) दर्शन शिक्षा की प्रकृति को समझने में सहायक_--- शिक्षा की प्रकृति को दर्शन के अभाव में समझना कठिन कार्य है। समाज के दर्शन की मदद से ही शिक्षा का उद्देश्य ,पाठचर्या, शिक्षण विधियों आदि को समझा जा सकता है।

(४) शिक्षा दर्शन की जीवंतता को कायम रखता हैं _---- शिक्षा हमेशा दर्शन द्वारा प्रभावित होता है ऐसा नहीं यह समय-समय पर दर्शन को भी प्रभावित करता है। जहां पर शिक्षा का अभाव होगा वहां दर्शन जिंदा नहीं रह सकता। शिक्षा के द्वारा मनुष्य चिंतनशील होकर उन्नत चिंतन का विकास करता है ।फलस्वरूप सत्य असत्य, सही गलत ,आत्मा परमात्मा के भेद को समझ पाता है। अतः शिक्षा दर्शन का साधन तथा गत्यात्मक स्वरूप है।

(५) दर्शन शिक्षा के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक साधन है:-जब तक समस्त दार्शनिक चिंतन को शिक्षा के माध्यम से व्यवहारिक रूप में नहीं लाया जाएगा तब तक दर्शन का तथा शिक्षा का उद्देश्य नहीं प्राप्त किया जा सकता है!

(६) दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं-रास के शब्दों में दर्शन एवं शिक्षएक सिक्के के दो पहलू हैं ,एक दूसरे के पूरक भी !दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है ।ऐडम्स भी इसे स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि शिक्षा दर्शन का गतिशील पहलू है तथा दर्शन, विश्वास का सक्रिय पक्ष है और जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने का व्यवहारिक साधन है
।
(७) दर्शन तथा शिक्षा एक दूसरे के पूरक हैं--- शिक्षा एवं दर्शन में गहरा संबंध होने के कारण ,यह एक दूसरे पर निर्भर करते हैं ।यह एक दूसरे को प्रभावित करने के साथ-साथ नियंत्रित भी करते हैं । फिक्टे के अनुसार दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा का उद्देश्य कभी भी पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो सकता है ।बटलर अपने शब्दों में कहते हैं कि दर्शन शिक्षा के प्रयोग के लिए पथ प्रदर्शक है जबकि शिक्षा शोध के क्षेत्र के रूप में दार्शनिक निर्णय के लिए निश्चित सामग्री का आधार प्रदान करती है।